पाठ–9

हमारी धरोहर–तीर्थराज मचकुंड

राष्ट्रीय राजमार्ग–3 पर स्थित धौलपुर ज़िला मुख्यालय से मात्र 3 किलोमीटर पश्चिम में अरावली की गोद में स्थित प्राकृतिक सरोवर मचकुंड पौराणिक महत्त्व का स्थान है। यह स्थान भगवान श्रीकृष्ण व मुचुकुंद महाराज के जीवन से जुड़ा हुआ है। मुचुकुंद महाराज से संबंधित होने के कारण ही इसे कालांतर में मचकुंड कहा गया। विष्णु पुराण के पंचम अंश के 23वें अध्याय व श्रीमद्भागवत के दशम् स्कंद के 51वें अध्याय में इस स्थान का वर्णन मिलता है। किंवदंती है कि त्रेता युग में हुए देवासुर संग्राम में इंद्र ने महाराज मुचुकुंद को अपना सेनापति बनाया था। इस युद्ध में विजय होने के बाद मुचुकुंद महाराज विश्राम के लिए श्यामाचल पर्वत की एक गुफ़ा में जाकर सो गए। देवताओं ने उन्हें वरदान दिया कि जो आपकी नींद में खलल डालेगा अर्थात आपको जगाने पर आपकी प्रथम दृष्टि जिस पर पड़ेगी वह भस्म हो जाएगा। जब जरासंध ने कृष्ण से बदला लेने के लिए मथुरा पर आक्रमण किया तो कालयवन नामक दैत्य भी उसके साथ था। भगवान शंकर से उसे युद्ध में अजेय रहने का वरदान मिला हुआ था। शंकर के वरदान को पूर्ण करने के लिए श्रीकृष्ण को रणछोड़ कर भागना पड़ा। इसी से श्रीकृष्ण 'रणछोड़' कहलाए। कालयवन ने श्रीकृष्ण का पीछा किया। श्रीकृष्ण भागते हुए श्यामाचल पर्वत की उस गुफ़ा में पहुँच गए जहाँ मुचुकुंद महाराज सो रहे थे। वहाँ पहुँचकर श्रीकृष्ण श्यामाचल पर्वत की गुफ़ा में निद्रासीन मुचुकुंद महाराज के ऊपर अपनी पीतांबरी डाल कर छिप गए। कालयवन जब श्रीकृष्ण का पीछा करता हुआ वहाँ पहुँचा तो उसने मुचुकुंद महाराज को श्रीकृष्ण समझकर ललकारा। मुचुकुंद महाराज जगे तो उनकी दृष्टि कालयवन पर पड़ी। नेत्रों की ज्वाला से कालयवन भस्म हो गया। यहाँ श्रीकृष्ण ने मुचुकुंद महाराज को विष्णु रूप में दर्शन दिए। अभिभूत मुचुकुंद महाराज ने भगवान श्रीकृष्ण से संसार में शांति का मार्ग पूछा। श्रीकृष्ण ने उन्हें यहाँ पाँच कुंडीय यज्ञ करके गंधमादन पर्वत पर तपस्या के लिए कहा। महाराज मुचुकुंद ने यहाँ पाँच कुण्डीय यज्ञ कर ऋषि पंचमी को पूर्णाहुति दी तथा अगले दिन भाद्रपद शुक्ला छठ, जिसे देवछठ भी कहा जाता है, को भोज का आयोजन किया। यह स्थान आजकल मचकुंड के नाम से जाना जाता है।

मचकुंड पर अपूर्व प्राकृतिक छटा से युक्त पवित्र सरोवर के किनारे मंदिरों का निर्माण धौलपुर

रियासत के शासक महाराज भगवंतसिंह के काल में हुआ। यह स्थान धार्मिक आस्था, पवित्र स्नान तथा कौमी एकता के लिए जाना जाता है। यहाँ प्रत्येक माह की पूर्णिमा को दीपदान व महाआरती का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक माह की अमावस्या को परिक्रमा का आयोजन धार्मिक आस्था और संस्कृति को साकार कर देता है। यहाँ प्रतिवर्ष भाद्रपद–शुक्ला छठ को वार्षिक मेला भरता है। इस मेले में श्रद्धालु पवित्र स्नान करते हैं व शादियों की मौरछड़ी व कलंगी आदि का विसर्जन करते हैं। इस पवित्र कुण्ड के कुल 40 घाट हैं। मान्यता है कि इसमें स्नान करने से चर्म रोग समाप्त हो जाते हैं। इस स्थान को तीर्थों का भानजा कहा जाता है। इस कुण्ड के आस–पास अनेक हिन्दू मंदिर, सिक्ख गुरुद्वारा तथा निकट पहाड़ी पर मौनीबाबा की गुफ़ा व अब्दाल शाह की मज़ार है।

यहाँ बने मंदिरों में रानी गुरु मंदिर, लाडली मोहन मंदिर तथा राजगुरु मंदिर विशेष महत्त्व के हैं। इन मंदिरों में लाडली मोहन मंदिर काफी प्राचीन है। इसकी स्थापना सम्वत् 1899 में राजखजाने से की गई थी। धौलपुर के लाल पत्थर से जड़ित यह मंदिर शिल्प कला व नक्काशी का सुंदर नमूना है। इसके चौक के मध्य 7 फीट ऊँचाई पर अष्टकोण में एक शिवालय है। यहाँ पंचमुखी शिवलिंग के अलावा हनुमान, राम, जानकी व बलराम की मूर्ति विराजमान है। राजगुरु मंदिर की स्थापना रियासत काल में महाराज भगवंत सिंह ने कराई थी। मंदिर में जगनाथ जी, बलराम जी, सुभद्रा जी, रामचंद्र जी, लक्ष्मण जी, जानकी जी के विग्रह सुशोभित है। मदनमोहन मंदिर इस सरोवर के आग्नेय कोण में स्थापित है। इस मंदिर को रानी गुरु मंदिर के नाम से जाना जाता है। यहाँ सिक्ख धर्मावलंबियों का एक गुरुद्वारा है जिसे दातावंदी छोड़ शेर शिकार गुरुद्वारे के नाम से जाना जाता है। माना जाता है कि 4 मार्च, 1612 में सिक्खों के छठे गुरु हरगोंविद सिंह ग्वालियर जाते समय यहाँ एक दिन ठहरे थे। गुरुद्वारे में भजन कीर्तन व लंगर का आयोजन होता है।

मचकुंड के पास एक पहाड़ी पर अब्दाल शाह रहमतुल्ला अलैह सूफी संत की मज़ार है। पहाड़ी पर मौनी बाबा की गुफ़ा भी है। जनश्रुति है कि अब्दाल शाह व मौनी बाबा की एक बार भेंट हुई थी। दोनों परोपकारी संत थे। यहीं पर अब्दाल शाह ने अपना स्थान बनाया। यह स्थान सांप्रदायिक सौहार्द व कौमी

एकता की अनूठी मिसाल है। यहाँ देवछठ के वार्षिक मेले पर कव्वाली का आयोजन किया जाता है। मचकुंड सरोवर के पास स्थित छीतरीया ताल भी पर्यटन की दृष्टि से आकर्षक स्थान है। यह ताल राज्य सरकार द्वारा नौकायन के लिए विकसित किया जा रहा है। मचकुंड के पास स्थित मौनी बाबा की गुफा आज भी पर्यटक व श्रद्धालुओं को आकृष्ट करती है। इस स्थान की पवित्रता बनाए रखने के लिए प्रतिवर्ष स्काउट गाइड़, एन.सी.सी., सांस्कृतिक धरोहर सेवा वाहिनी एवं अन्य स्वयंसेवक यहाँ श्रमदान करते हैंतथा धौलपुर नगर परिषद् नियमित सफाई कराती है। ऐसे स्थानों पर गंदगी फैलाने से हमारी विरासत को क्षति पहुँचती है। यहाँ आयोजित मेले व कव्वाली में सभी धर्म व संप्रदाय के लोग बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं। मेले के दिन नगर में भारी उत्साह देखा जा सकता है। मचकुंड सरोवर के नैसर्गिक सौंदर्य, धार्मिक महत्त्व व प्रकृति की छटा को देखते हुए इसे पूर्वांचल का पुष्कर कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

शब्दार्थ

स्कन्द	भाग	संग्राम	लड़ाई
दृष्टि	नजर	भस्म	राख
दैत्य	राक्षस, दानव	ज्वाला	अग्नि, आग
विग्रह	प्रतिमा, मूर्ति		

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

गंधमादन, मुचुकुंद, कुंडीय, प्राकृतिक, भाद्रपद, धर्मावलम्बी, जनश्रुति

सोचें और बताएँ

1. तीर्थराज मचकुंड का उल्लेख किस पुराण में मिलता है?
2. भगवान कृष्ण को 'रणछोड़'क्यों कहा जाता है?
3. मचकुंड सरोवर पर पवित्र मंदिरों का निर्माण किस काल में हुआ था?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. मचकुंड का प्रसंग मिलता है, श्रीमद्भागवत के–
   (क) 23वें अध्याय में (ख) 46वें अध्याय में (ग) 51वें अध्याय में (घ) 57 वें अध्याय में ( )
2. देवासुर संग्राम में इन्द्र ने अपना सेनापति बनाया था–
   (क) कृष्ण को (ख) अर्जुन को (ग) मुचुकुंद महाराज को (घ) कालयवन को ( )
3. मचकुंड सरोवर पर प्रतिवर्ष वार्षिक मेले का आयोजन होता हैं–
   (क) भाद्रपद शुक्ला दूज को (ख) भाद्रपद्र शुक्ला छठ को
   (ग) भाद्रपद शुक्ला दशमी को (घ) आश्विन शुक्ला दशमी को ( )

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मचकुंड सरोवर राजस्थान के किस ज़िले में स्थित है?
2. मचकुंड सरोवर के पास निर्मित गुरुद्वारा किस सिक्ख गुरु की स्मृति से जुड़ा है?
3. मचकुंड तीर्थ के पास प्रसिद्ध गुफा का नाम लिखिए।
4. अब्दाल शाह की मज़ार पर कव्वाली का आयोजन कब होता है ?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मचकुंड सरोवर के धार्मिक व सांस्कृतिक महत्त्व को लिखिए।
2. मचकुंड सरोवर जैसे धार्मिक व ऐतिहासिक स्थलों की स्वच्छता व संरक्षण हेतु क्या–क्या उपाय किए जाने चाहिए ? लिखिए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़िए –

सरोवर, अध्याय, श्रीमद्भागवत, देवासुर, पूर्णाहुति

इन शब्दों की रचना इस प्रकार हुई है –

सरः + वर – सरोवर

अधि+ आय – अध्याय

श्रीमत् + भागवत् – श्रीमद्भागवत

देव + असुर – देवासुर

पूर्ण + आहुति – पूर्णाहुति

वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहा जाता है। हिंदी में संधि के तीन भेद माने जाते हैं–

(1) स्वर संधि (2) व्यंजन संधि (3) विसर्ग संधि

स्वर संधि– दो स्वरों के मेल को स्वर संधि कहते हैं;

जैसे– देवासुर, पूर्णाहुति, अध्याय

स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं।

(1) दीर्घ संधि – पूर्णाहुति

(2) गुण संधि – महेश

(3) वृद्धि संधि – सदैव

(4) यण् संधि – प्रत्येक

(5) अयादि संधि – पावन।

व्यंजन संधि– जब व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आए और पूर्व व्यंजन में परिवर्तन हो तो इस परिवर्तन को व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे–जगदीश, सदाचार।

विसर्ग संधि – जब आपस में मिलने वाले दोनों शब्दों में पहले शब्द के अंत में विसर्ग (:) और दूसरे शब्द के आरंभ में कोई स्वर या व्यंजन होने से विसर्ग में परिवर्तन हो, वहाँ

विसर्ग संधि होती है; जैसे–मनोबल, तपोवन, तपोबल।
आप भी पाठ से संधि शब्दों को छाँटिए और उनके भेद लिखिए।

पाठ से आगे

राजस्थान में पवित्र सरोवर हमारी धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों के जीवन्त स्मारक हैं। पुष्कर राज, कोलायत तीर्थ, लोहार्गल तीर्थ, गलता जी, भीमगौड़ा, विमल कुण्ड आदि राज्य के इसी प्रकार के तीर्थ हैं। आप अपने नजदीकी तीर्थ के बारे में जानकारी कर उसके बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

यह भी जानें

धौलपुर राजस्थान का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा ज़िला है। यह ज़िला राज्य के पूर्वी भाग में उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश की सीमाओं पर स्थित है। यह ज़िला देश में अपने शानदार रेड स्टोन जिसे रेड डायमंड कहा जाता है, के लिए भी जाना जाता है। यह पर्यटन की दृष्टि से अपार संभावनाओं से भरा हुआ है। यहाँ के दर्शनीय स्थलों में मचकुंड सरोवर के अलावा तालाब–ए–शाही, खानपुर महल, वन विहार, केसर बाग व रामसागर अभयारण्य, केसर क्यारी, देवहंस का किला, हनुहुंकार तोप, सिटी पैलेस, चंबल उद्यान, चंबल सफारी, दमोह झरना, सैंपऊ महोदव, पार्वती डेम और शेरगढ़ दुर्ग आदि भव्य स्थान हैं।

यह भी करें

1. राजस्थान के मानचित्र में धौलपुर ज़िले को पहचानिए।
2. निम्नांकित चित्र को ध्यान पूर्वक देखिए और उन कारणों का पता लगाइए जिनके कारण हमारे जल प्रवाह प्रदूषित हो रहे हैं। इन्हें प्रदूषण से बचाने के लिए क्या उपाय कर सकते हैं। चर्चा करें।

जानें, गुनें और जीवन में उतारे

अप्पस्मा दक्खिणा दिन्ना सहस्सेन समंमिता। (पालि भाषा) –'संयुक्तनिकाय'
थोड़े में से भी जो दान दिया जाता है। वह हज़ारों के दान की बराबरी करता है।